नगर की उत्पत्ति के सिद्धान्त

आधुनिक मानव की ये बस्तियाँ, जिन्हें हम नगर कहते हैं, की उत्पत्ति कैसे हुई ? इनके उद्भव के पीछे कौन से कारक रहे ? इनका आदिम या प्रारम्भिक स्वरूप कैसा था ? इन प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास सामाजिक वैज्ञानिकों ने किया और अपने विचार दिये। इनमें से कुछ के विचार नीचे दिये जा रहे हैं –

(1) अतिरिक्त उत्पादन का सिद्धान्त – इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किंग्सले डेविस ने किया। रॉबर्ट बियरस्टैड भी इससे सहमत हैं। डेविस लिखते हैं कि नगरों का इतिहास अधिक पुराना (वास्तव में 8,000 वर्षों से अधिक पुराना) नहीं है। प्रारम्भिक नगर के कुछ समय पूर्व ही प्रकट होने से उनके स्वयं के प्रमाण अभी खोए नहीं है। लेकिन पुरातत्त्वशास्त्री इस बारे में अभी भी निश्चित नहीं है कि उन्होंने प्रथम नगर की खोज कर ली है। ये प्राचीन पुरातत्त्व सम्बन्धी प्रमाण अभी अपूर्ण और अनिश्चित हैं, क्योंकि होता यह है कि, जैसा कि किंग्सले डेविस कहते हैं "पुरातत्ववेता खुदाई से प्राप्त किसी भी सड़क या इमारत को ही नगर का नाम दे डालते हैं।" लेकिन इन अवशेषों से यह प्रमाणित हो जाता है कि प्राचीन समय में लोगों की बस्तियाँ थी, लोग भूमि पर बिखरे हुए नहीं रहते थे।

किंग्सले डेविस ने नगरों के विकास के मूल में एक साधारण से कारक 'अतिरिक्त उत्पादन' को माना है। डेविस कहते हैं कि आज भी हम देखते हैं कि नगर खाद्यान्न के लिये गाँवों में अतिरिक्त उत्पन्न होने वाले खाद्यान्नों पर निर्भर हैं। इसलिये जब तक प्रत्येक परिवार या इकाई केवल उतना ही भोजन पैदा करता है, जितना उसके लिये आवश्यक है और उसका उपयोग कर लेता है तब तक नगरों का जन्म असंभव है। अतः संक्षेप में अतिरिक्त खाद्यानों का उत्पादन नगरों के जन्म का आधार है।

इस अतिरिक्त उत्पादन को दूसरे स्थानों पर भेजे जाने की तकनीक एवं साधनों का ज्ञान होना दूसरा सहायक कारक है। वस्तुतः अतिरिक्त उत्पादन से ही नगरों का विकास संभव नहीं है। अतिरिक्त उत्पादन को नगरों तक पहुंचाने की व्यवस्था भी होनी चाहिये। यह

Scanned with CamScanner

व्यवस्था जानवरों की पीठ, पहियेदार गाड़ी या पाल से चलने वाली नाव जैसी वस्तु हो सकती है।

डेविस का मानना है कि उत्तर-पाषाण युग में जब मानव ने एक स्थान पर रहकर खेती प्रारम्भ की और इसी बीच कुछ नये आविष्कारों के कारण कृषि के क्षेत्र में अनेक बड़े परिवर्तन हुए, इनमें से धातु की खोज और इसके द्वारा बनाये जाने औजार प्रमुख थे। इन आविष्कारों ने बैलों द्वारा खींचा जाने वाला हल, पहियेदार गाड़ी, नये प्रकार के धातुओं द्वारा बनाई गई चीजें और उसके प्रयोग, सिंचाई, पाल द्वारा चलने वाली नाव, इन सभी तकनीकी आविष्कारों के कर्त्ता मूलतः कृषक आविष्कारक थे। इन सबने अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों के साथ मिश्रित होकर अतिरिक्त कृषि उत्पादन को संभव बनाया, जिसने नगरीय लोगों के जीवन को सरल बनाया जो अनाज नहीं उगाते थे।

इस प्रकार डेविस ने अतिरिक्त उत्पादन के मूल में तत्कालीन कृषक आविष्कारों, जिसमें धातु की खोज, पहिया, धुरी, लोहे की फाल वाला हल के साथ अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों को भी रखा है। कृषि के लिये अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों में ऐसे क्षेत्रों को रखा है जहाँ की जलवायु पर्याप्त शुष्क और धूप प्रदान करने के अनुकूल हो, जहां प्राकृतिक वनस्पति इतनी कम थी कि उन्हें साफ करने में अधिक श्रम की आवश्यकता नहीं पड़ी। जहाँ वर्षा इतनी अधिक नहीं होती थी कि जमीन जल से भर जाये और जहाँ की भूमि इतनी उपजाऊ और समृद्ध थी जो कुछ ही फसलों से अपनी उर्वरता को समाप्त न कर देती हो। ये स्थितियाँ नदियों की उर्वरक घाटियों में बहुधा पाई जाती थी, जहाँ वर्षा कम होती थी, किन्तु नदियों की बाढ़ से वहाँ सिंचाई हो जाती थी। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रथम नगर नील, दजला, फरात तथा सिन्ध की घाटियों में उत्पन्न हुये। नये संसार में (अर्थात् उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका में) पहले नगर रेगिस्तान की नदियों की घाटियों में, इण्डीज पर्वत तथा प्रशान्त महासागर के बीच में ग्वाटेमाला के पठार में तथा मैक्सिको की घाटी में उत्पन्न हुए। नदियाँ कृषि के लिये सिंचाई के साधन ही नहीं बल्कि यातायात को भी सुगम बनाती हैं।

सहायक कारक के रूप में किंग्सले डेविस के अनुसार कुछ और बातों की भी आवश्यकता है, जो नगरीय विकास के लिये उत्तरदायी हैं। डेविस का मानना है कि नगर को अपनी कुछ सेवाएँ ग्रामीणों को भेंट करनी होती थी अथवा उन पर अपनी शक्ति को स्थापित करना होता था। नगरों ने यह उद्देश्य उत्पादित वस्तुओं का व्यापार करके, सैनिक संरक्षण की सुविधायें प्रदान करके, धार्मिक सेवाओं की सुविधाओं को अर्जित करके एवं मनोरंजन तथा आमोद-प्रमोद के साधन जुटाकर पूर्ण किया।

इस प्रकार डेविस ने नगरों के विकास के मूल में अतिरिक्त उत्पादन, यातायात की पर्याप्त व्यवस्था एवं नगरों द्वारा ग्रामीणों को अपनी सेवाएँ देने को महत्त्वपूर्ण माना है। यह सब धातु युग और उसमें हुए आविष्कारों से संभव हुआ।

(2) सैनिक आधिपत्य का सिद्धान्त - मारगेट ए. मूरे ने 'द स्पिलिण्डर दैट वाज इजिप्ट' नामक पुस्तक में इसे प्रतिपादन किया। मूरे का मानना है कि युद्ध हमारे सामाजिक जीवन का एक स्थाई कर्म रहा है। धातु के विकास के साथ-साथ पाषाण-युग में धातु के

Scanned with CamScanner

हथियार वाले लोगों ने पत्थर की कुल्हाड़ी रखने वालों पर विजय पाई। मारगेट ए.मूरे ने लिखा है कि नव-पाषाण कालीन व्यक्ति जो ताँबे, काँसे और लोहे के हथियार बनाना नहीं जानते थे, उन लोगों का शिकार बन गये जो इन धातुओं का प्रयोग जानते थे। आक्रमणकारी उन लोगों को देवी-देवताओं के रूप में आकर डराते थे और उनको अपना दास बना लेते थे। संक्षेप में इन आक्रमणकारियों ने विजित स्थानों पर प्रथम नगरों में सैनिक शिविरों की स्थापना की जो कि प्रथम नगर बने।

एच.जी.क्रील ने भी हथियारों और लड़ाई को ही नगरों के विकास के लिये महत्त्वपूर्ण माना है। प्रारम्भिक काल में जनसंख्या में से एक शासक लड़ाकू वर्ग ने अपने आप को शेष जनसंख्या से अलग कर लिया जो खेती करती थी और इस प्रकार सैनिकों और किसानों के मध्य विभेद हो गया। प्रत्येक गाँव के कुछ लोग या कभी-कभी सभी लोग सैनिक या योद्धा बन गये और अन्य लोगों को कृषि-कार्य करने के लिये विवश किया। इन योद्धाओं ने कृषकों को संरक्षण प्रदान किया। बदले में कृषकों से खेती का एक भाग लिया और एक स्थान पर रहने लगे। इस प्रकार आरम्भिक नगर सैनिकों के शिविर थे जो आगे चलकर किले बने और बाद में आधुनिक नगर, जैसा कि नगरों के रूसी प्रतिमानों को देखने को मिलता है।

(3) आदिम गाँव का सिद्धान्त - ए. क्वीनीन एवं एलेप थॉमस ने 'द सिटी' नामक पुस्तक में कहा है कि प्रथम नगर आदिम गाँव थे, जो धीरे-धीरे नगरीय केन्द्रों में विकसित हुए। उन्होंने मूरे के सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा कि प्राचीरें कभी भी नगरों की विशेषता नहीं रही। नगर केवल पुराने किले नहीं हैं। उनके कहने का अर्थ यह है कि पहले गाँव विकसित हुए, धीरे-धीरे यही गाँव नगरों में परिवर्तित हो गये। यही विशाल नगर साम्राज्यों की राजधानी बने। उन्होंने कहा कि ल्यूटेसिया और विन्डोगोना ऐसे ही नगरों के उदाहरण हैं, जो प्रारम्भिक अवस्था में बहुत छोटे थे जहाँ पुरोहित, सैन्य नेता और उनके कारिन्दों को छोड़कर अन्यों के लिये घर बसाना मुश्किल था।

(4) परिवहन का सिद्धान्त - प्रसिद्ध समाजशास्त्री चार्ल्स कुले ने कहा है कि नगरों की उत्पत्ति यातायात और संदेशवाहन के साधनों के जन्म और विकास के साथ ही हुई। जो स्थान यातायात और संदेशवान की सुविधाओं के अनुकूल थे, वहीं पर नगरों की स्थापना हुई और नगर फूले-फले। कालीकट बस्ती से आधुनिक महानगर कोलकाता इसका दूसरा एक अच्छा उदाहरण है।

(5) सामाजिक परिवर्तन का सिद्धान्त - नेल्स एण्डरसन ने नगरों के विकास के मूल में परिवर्तनों को महत्त्वपूर्ण माना है, जो नये आविष्कारों की देन रहे हैं। आविष्कार और परिवर्तन जहाँ होते हैं, वे स्थान विकसित हो जाते हैं और ये विकसित स्थान अविकसित स्थानों पर आधिपत्य स्थापित करते चले जाते हैं।

(6) उद्विकास का सिद्धान्त - लुईस मम्फोर्ड ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द कल्चर ऑफ सिटीज' में कहा है कि नगरों का विकास गाँवों में हुआ है। बड़े-बड़े विशाल गाँव ही कालान्तर में नगरों में परिवर्तित हो गये। उन्होंने गाँव को अप्रजनव्य अण्डे की तरह माना है जिसमें भावी विभिन्नतापूर्ण और जटिल सांस्कृतिक विकास की संभावनायें अन्तर्निहित हैं, जो

Scanned with CamScanner

समय पाकर प्रस्फुटित होती हैं। मम्फोर्ड ने उद्विकासीय आधार पर नगरों के विकास की छः अवस्थाएं – इयोपोलिस, पोलिस, मैट्रोपोलिस, मैगापोलिस, टाइरेनोपोलिस और नैक्रोपोलिस बतलाई हैं।

Scanned with CamScanner